

DPN 6016

Title : जायत्री सहस्रनाम स्तोत्र SAYATRI SAHASRA NAMA STOTRA

Run. No. 6707

Cat. No. 60

Micro. No.

Subject स्तोत्र Stotra

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 24.5 x 10

Folios 12+2 Lines (in a page) 9

Compl. / Incompl.

missing 1st folio कलाङ्क १ मरु
Chapt. / act / ~~Extant~~ verses

Author / translator

Scribe / donor मथुरानाथ शर्मा / पशुपतिमान प्रभाय
धुके

Date: NS / SS / VS / KS 1932

Ruler / place Mathura nāth Śarmā / Pashupati-man

Script : New. / Dev. / Bhuji. / Ran. /

Illus. :

Pahmāyo

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu / Gurjara paper.

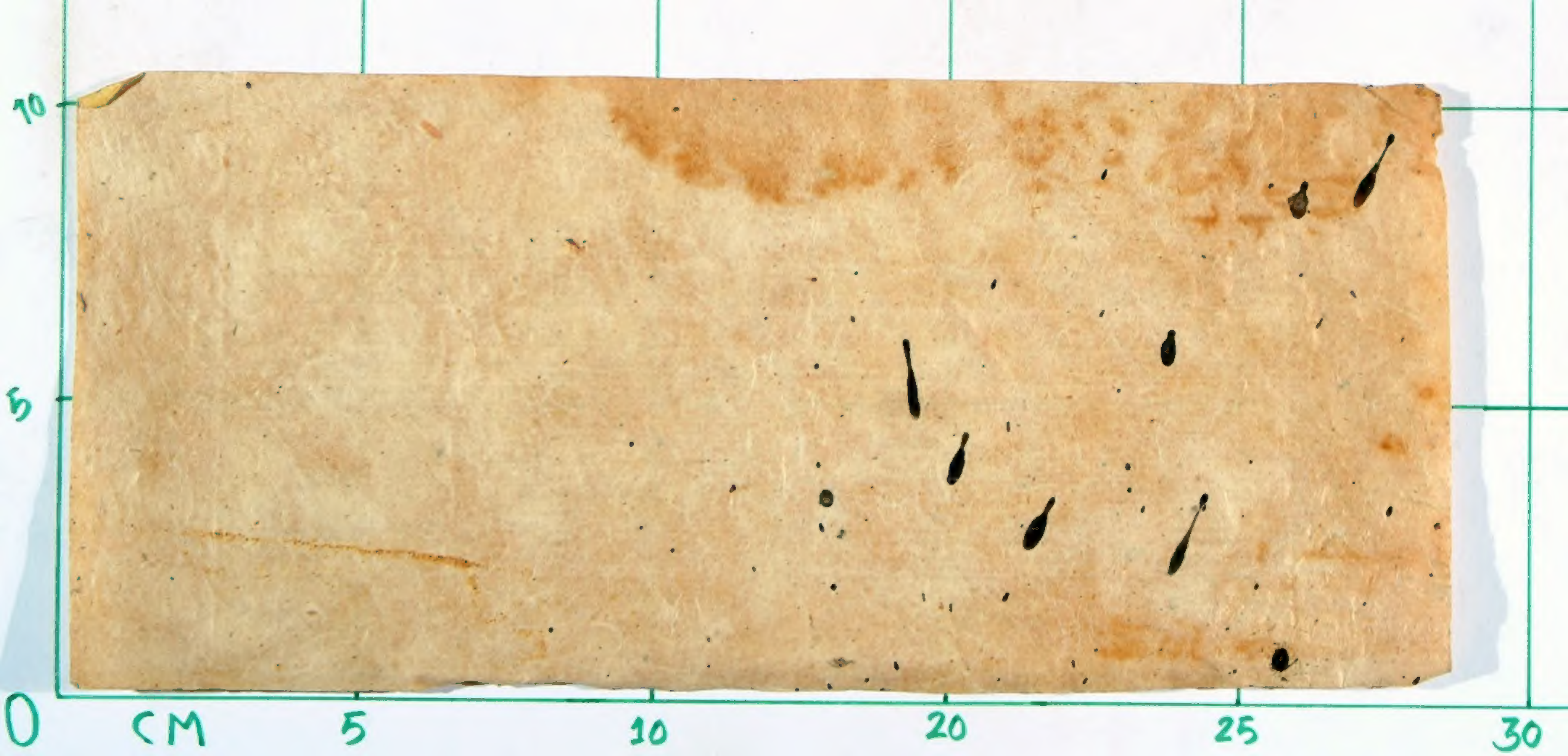
टिप्पणी : धुकी महाकाव्य है स्तोत्र १-२२५

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Remark : Also included in this
copy some verse 1-25 from
the Mahābhārata.

Beginning, colophon, post-colophon :

इति [जायत्री सहस्रनाम स्तोत्रम् संपूर्णम् द्युतम्] ॥ इति संवत् १९३२
स्तनमिति मार्गवादि ८ रोज ७ काहमांशनिर्दिष्टमिति पुस्तकम् ॥ मथुरानाथ शर्मा ॥



॥ २॥ गोमती ब्रह्मसुधा ह्री ब्रह्मरूपा परात्परा ॥ परात्परा त्रीमंत्रविद्या महाविद्या
महेश्वरी ॥ ३॥ व्याहृतिः सप्तलोकस्था ज्ञानदा ब्रह्मवक्षभा ॥ वटुंकी वेणुहस्ता वमह
ती महती क्षरा ॥ ४॥ मनोन्मनी मदक्षी वा मधुरा मधुरा कृतिः ॥ मनुप्रिया विष्णुभा
या वसुधा वसुपूजिता ॥ ५॥ कासवी वीरसुः क्षोणी क्षोणी भद्रा ध्रुवा ॥ वा
राही वनजा क्षीय पद्महस्ता सुरा र्विता ॥ ६॥ पद्मापीनस्तनी स्तुत्या कृतिः किंता
रनाशिनी ॥ सुदरी सुददेत्यघ्नी कुशलो कुशधारिणी ॥ ७॥ कुलेश्वरी क्रियाके
री कीर्ती शी वा मवध्वा ॥ सुरा सुरजुता नीतिभीतिहा भद्रा यिनी ॥ ८॥ भद्रकाली भो
ती भास्वती भास्वरानना ॥ पद्मानना पात्रहस्ता मणिकेयूरमंडिता ॥ ९॥ सरस्व
ती वमराल गतिरीश्वरी ॥ सर्वेश्वरी सर्वमान्या सर्वपातकनाशिनी ॥ १०॥ स

२०
 १५
 १०
 ५
 ०
 सभावाग्याजगदानंदलोचना ॥ विश्वरूपाविधात्रीवपूज्यामान्यामहाशया
 ॥ कुलत्रयधराधान्यामहासमयमंत्रदक रत्नमंत्रधराश्रेष्ठान्नियामोतेमये
 श्लोका ॥ १२ ॥ अमोघपाशविजयावज्रपाशमहाग्रहा ॥ वज्रांकुशावज्रपालीवज्र
 भैरवभूमिका ॥ १३ ॥ सविशुद्धिधर्मधात्रीज्ञाननाथागदग्रहा ॥ कोपनायरामुखी
 भीमायरात्रायड्डुजावली ॥ १४ ॥ दंष्ट्राकराभाकंकालाहलाहलशताननी ॥ हंस
 तीविघ्नशमनीवज्रवेगाभयंकरी ॥ १५ ॥ विपुष्टवज्राहृदयामयावज्रामहोदरी
 ॥ कुलेशेशिवज्रयोनिर्वज्रमुंडानलधुतिः ॥ १६ ॥ अचलेकजटाजूटागजवर्म
 पदादंदक ॥ हाहाकारमहाघोराहोहोकारभयानका ॥ १७ ॥ अदहासामहा
 साववज्रहासामहामही ॥ वज्रसत्तामहासत्तावज्रवुद्धिर्मदलया ॥ १८ ॥ वज्र

एमः
 ॥ २ ॥

५
 ०
 ५
 १०
 १५
 २०
 २५
 ३०
 वंशमहामेधावज्रहंकारहंरुतिः ॥ वज्रवाणायुधधरावज्रखड्गनिकंतना ॥ १९ ॥ वि
 श्ववज्रधराधीशसकवज्रांरंजया ॥ वज्रज्वालाकरलाक्षीवज्रवाणीशिलाभवा ॥ २० ॥
 वज्रवेशामहावेशाशताक्षीवज्रलोचना ॥ वज्ररोमांकुरातन्वीवज्रनामोग्रविग्रहा ॥
 २१ ॥ वज्रकोटिनखारंभावज्रसाराचनधुतिः ॥ वज्रमालाधनादिनावज्राभरणभू
 षिता ॥ २२ ॥ हाहादहासनिहोसानिधोवावज्रघोषणा ॥ षडक्षराषोडशीवचतु
 विंशक्षरामिका ॥ २३ ॥ मंजुघोषामहानादात्रिलोकेक्यवरप्रदा ॥ आकाशाधा
 तुपर्यंताघोषावेदांगधारिणी ॥ २४ ॥ भूतेश्वरीवुद्धमाताभूतहंत्रीनिरक्षसा ॥ शून्य
 पदमभारूढादृषध्वजकुटुंबिनी ॥ २५ ॥ गंभीरगणमातावगणपूज्यातिगर्जना
 मंजुकासामहाशब्दाधर्मगुणामहामतिः ॥ २६ ॥ अप्रतिष्ठितिनियरिणादरादिग्ध

दुभिः ॥ आरूपारूपवत्पुत्रानानारूपामनीमयी ॥ २७ ॥ सर्वरूपावभासश्रीरशे
 प्रतिविबधक ॥ अप्रधयामहाधयामहाशंखावशंखिनी ॥ २८ ॥ डाकिनीहाकि
 नीलंकंखापावंकरसंतिभा ॥ समुद्रितार्कविंस्थाधर्मकेतुमहोदया ॥ २९ ॥ त्रिवर्गा
 सुकुमारंगी स्थविरास्था सुसुंदरी ॥ रुद्राप्रजावतीप्राज्ञा हात्रिंशद्वक्षणात्रया ॥ ३०
 ॥ कांताननाकीर्तिधाराक्रीडात्रैलोक्यसुंदरी ॥ लोकज्ञानागुणचार्यासुराचार्यागु
 रोश्वरी ॥ ३१ ॥ वामाचार्यप्रियाहृति लोकवारविशारदा ॥ शारदाश्रुलहस्तावशर
 णपारणादुजया ॥ ३२ ॥ गगनाभोगसंभोगात्रिलोकजननीजया ॥ सर्वज्ञासर्वलोक
 स्थासर्वज्ञानदायिनी ॥ ३३ ॥ अविद्याबंडकोशस्थाभवपंजरधारिणी ॥ शमिता
 शेषसंक्रेशसंसारणीवपारदा ॥ ३४ ॥ ज्ञानाभिषेकमुकुटासम्पकसंबुद्धभूषणा ॥

रामः
 ॥ ३ ॥

त्रिदुःखदुःखशमतीतं तानंतात्रिमार्गमा ॥ ३५ ॥ सर्ववरणनिर्मुक्ताआकाशसमतंगता
 ॥ सर्वकेशपथातीतात्रिधाताध्यातनाशिनी ॥ ३६ ॥ सर्वतत्त्वासधिस्यास्थास्थानुश्रीरवशे
 खरा ॥ सर्वपाधिविनिर्मुक्ताव्योमवर्त्मनिसुस्थिरा ॥ ३७ ॥ महाविंतामणिगृहासर्वर
 लोत्तमोत्तमा ॥ महामहाकल्पतरुमहाभद्राघटोत्तमा ॥ ३८ ॥ सर्वसत्त्वार्थकर्तृस्वहि
 तश्रीः सर्वतस्थला ॥ शुभाशुभज्ञाकालज्ञासमज्ञासमयस्थिता ॥ ३९ ॥ सत्वर्द्धवेलाज्ञान
 दाविमुक्तत्रयकोविदा ॥ गुणत्रयीवेदभाषाधर्मज्ञाशर्मदायिनी ॥ ४० ॥ प्रशस्तामंग
 लाभुद्रासर्वमंगलकारिणी ॥ मंगल्याकीर्तिदालक्ष्मीयशोदावयशस्विनी ॥ ४१ ॥
 लोसवामहेय्यासामहानंदमहारतिः ॥ सत्कारासत्कृतिभूतिः प्रमोदश्रीर्यशो
 ॥ ४२ ॥ वरेण्यवरदाप्रेय्याशरणपाशरणोत्तमा ॥ महासायातिशमनीदमनीदेव

ला ॥ ४३ ॥ वपलाक्षीकोटराक्षीपद्माक्षीपद्मभूषणा ॥ शिखंडिनीशिखिज्योतिशि
 हनयनंदिता ॥ ४४ ॥ नंदिनीवदिनुत्पावज्जिलाकुटिलालका ॥ किरीटिणीवज्जिणी
 वगदिनीवज्जनेपुरा ॥ ४५ ॥ कांचिकावनवर्णाभाकांचिनिनिवादिती ॥ हारिणीतारणी
 तारानीलानीलपताकिनी ॥ ४६ ॥ नीलवर्णीनीलकानिनलिनीनलिनालया ॥ महास्त
 धरामोंजीव्रतस्थाब्रह्मवारिणी ॥ ४७ ॥ महातपातपोनिष्ठास्नातकीब्रह्मवर्दिनी ॥ तिर्क्का
 रापदवीभुक्तिःसौरव्यदादुःखहारिणी ॥ ४८ ॥ कारिकाशरिकाशांताशांतिदाभ्रान्तिहारिणी
 ॥ सुखदुःखप्रदाशांतिनिरालोकानिराश्रया ॥ ४९ ॥ निःशेषपापहापीताकपोतिपूत
 नाप्रजा ॥ सूक्ष्मास्थूलासूक्ष्मवीजास्थितिःस्थूलाकृतिःसिता ॥ ५० ॥ विभावतिर्महालक्ष्मी रामः
 राज्यलक्ष्मीवयदूकरी ॥ किंकरीकुं कृतिभ्रंवाब्राह्मणीब्रह्मपूरिता ॥ ५१ ॥ नैकवधुरम ॥ ४ ॥
 गारपरादि १

वासुंमंमुं हस्ताकपालिनी ॥ शंभवीकंबुकंहीव नलकंदीनयोत्तमा ॥ ५२ ॥ वाराहीवव
 ससेहानारसिंहपरजिता ॥ कोभाशिकुलवक्रस्थाकोलिकीकुलदेवता ॥ ५३ ॥ कलवागी
 श्वरीवारीकुवरीकुहकेश्वरी ॥ ज्ञानधर्मपथातीताज्ञानद्वयपदस्थिता ॥ ५४ ॥ निर्विकल्प
 निरभोगातवरत्नवरप्रदा ॥ अनादिवोधनाप्रीतिरादिवुद्धिनिरन्वया ॥ ५५ ॥ सानैक
 वधुरमलाज्ञानमूर्तिस्तथेश्वरी ॥ भोजेश्वरीमहाभोग्यावादिसंहिमगेश्वरी ॥ ५६ ॥
 सामंतसर्वतःसाध्यातेजोमालासुदर्शना ॥ दुर्दर्शदेवकीदंतादुरदर्शीदुरमतिः ॥
 ५७ ॥ श्रीवत्ससुप्रभाभीतिहारकेयूरभासुरा ॥ भास्वद्विलोचनागर्भीभृगुपत्नीभृगु
 प्रिया ॥ ५८ ॥ महाभिवर्कवित्सार्ववेदशाखाप्रमाथिनी ॥ प्रथाप्रमाथांमातावप्रमथा
 क्षपवद्वर्मा ॥ ५९ ॥ रोगहृत्कल्पवद्धीववराभयकरासभा ॥ विभाविभावरीहनिवृ

तत्रयसमुज्ज्वला ॥ ६० ॥ अशोपभैषज्वलताकेशवाधिहराक्रिया ॥ कीयावतीव
 निश्रयाशनवेशीद्यावती ॥ ६१ ॥ त्रैलोक्यवशिनीदुर्गादुर्गमानिगमाश्रया ॥ नक्षत्र
 मंडलोद्योतिस्त्रैलोक्यतिलकोज्ज्वला ॥ ६२ ॥ दशादिगोमपर्यन्ताधर्मध्वजमही ॥
 ॥ जगच्छत्रैकविपुलामैत्रीकरणमंडला ॥ ६३ ॥ पद्मानदेश्वरीनद्यावर्त्तपद्मेज्ज्वला
 मुरवा ॥ रत्नछत्रारत्नकांचीरत्नपीठनिषेदुयी ॥ ६४ ॥ सर्वसिद्धप्रदासाध्वीसर्वदेव्ये
 दशासिनी ॥ रत्नसिंहासनस्थावरत्नकुंडलमंडिता ॥ ६५ ॥ मायाजालहरमायाज
 लांधरनिवासिनी ॥ उडीयानपदस्थावसर्वपीठकृतालया ॥ ६६ ॥ मूलाधारस्थिता
 साध्वीरसवीपूरितानना ॥ साध्विष्ठानेश्वरीदेवीमणिपूरनिवासिनी ॥ ६७ ॥ अ
 नाहताश्रियादेवीविशुद्धिपदनायका ॥ आज्ञाहताश्रितेशीवनवचकेश्वरी ॥

रामः
 ॥ ५ ॥

६८ ॥ चंद्रवरीकनाखलापाचक्रनायकपूरिताः ॥ ब्रह्मरंध्रास्थिताश्यामापरब्रह्ममयी
 विद्यार ॥ ६९ ॥ आनंदनिलयातंदसुखादेवीवभैरवी ॥ भ्रुकुटीभूमहोजस्कासधकेश्वर
 पूजिता ॥ ७० ॥ आनंदभैरवीकालीमहाकालीकुलाविका ॥ विशुद्धधर्मनेरात्म्यासम्प
 कशानेदुहाप्रभा ॥ ७१ ॥ अशेषवज्रपर्यंकानिःशेषमणिभूषणा ॥ समंतभद्रवंशेशी
 विद्यात्रिपुरभैरवी ॥ ७२ ॥ ऐंदवींधुमध्यस्थामहात्रिपुरसुंदरी ॥ जगन्माताजगद्दशाज
 गकुम्भीजगद्धति ॥ ७३ ॥ विश्वदिग्विश्वधृग्विश्वविश्वंवरसमर्विता ॥ विश्वार्थविश्व
 धर्मशीविश्वनाथैकवध्वभा ॥ ७४ ॥ वाराणसीमधुपरीछारकावंतिकागया ॥ गंगावि
 यन्नदीनादाविद्यानादाविकारमा ॥ ७५ ॥ त्रिनादात्रिस्वरत्रयानादजानादेवेदेवी ॥ एक
 विंशाक्षरविद्याशिववामाकवर्तिनी ॥ ७६ ॥ सप्तपातालनिलयासप्तलोकेश्वरीसरिता ॥

१०
 महाप्राज्ञा पारमिता मीमांसा पांचमी प्रिया ॥ ७७ ॥ मीन मांसा सना जोडी सुरा सर्व वि
 नादनी ॥ वैष्णवी तर्क सारज्ञा सर्व धर्मा व बोधिनी ॥ ७८ ॥ मेना तमजा मीन मूर्ति मेधा
 कंशरा प्रदा ॥ स्तिमिता सुप्रसन्ना त्मा परमात्म प्रबोधिनी ॥ ७९ ॥ ज्ञाता विविरुता
 वीरपाताति तोषिता ॥ वीर्यकेश्वरी वंद्या महाश्वीनक्रमेश्वरी ॥ ८० ॥ इच्छार्थ साधि
 नी संपत् सर्व धर्मा व बोधिनी ॥ सर्व सत्वोत्तमानारी नरनारायणेश्वरी ॥ ८१ ॥ सर्व सत्व
 प्रमोदा व सोर्य देश्वर्यदाशिवा ॥ स्मरानतिलघानित्या काल भैरव पूजिता ॥ ८२ ॥
 ब्रह्मेश्वरी ज्वलन्तोता ज्वलत्पावक सन्निभा ॥ मुक्ताभरणा मृगया व्याविद्रुमाले क
 ता तडित ॥ ८३ ॥ तडित्कोटि सप्ताख्या तातारा पंचदशेक्षणा ॥ ज्ञां वृषदासनस्था वर्यरा
 कं कणराजिता ॥ ८४ ॥ अनर्घ्य मणि संपूर्ण किं किं जालन कूजिता ॥ पिक स्वनाघा

रामः
 ॥ ८५ ॥

१०
 ६
 एतादातादहं सखरूपिणी ॥ ८५ ॥ अज्ञान भंजनी शक्ती निःशेष रिपुर्दह रुत ॥ धीः शृंगा
 रधार शृंगा सर्व शृंगार शोभिता ॥ ८६ ॥ विभक्ता साधक प्रीता साधकारि विनाशिनी ॥ साधा
 सिद्धि व सिद्धि श्ररिभाव निरुतनी ॥ ८७ ॥ बाहु दंड शतशेषा पदनिक्षेप नर्तनी ॥ नटिनी
 नायक शतारमणी वासना विता ॥ ८८ ॥ बलिर्पे हारवाला नटनर्तक वेदिता ॥ श्रीमथ
 तभुजा भोग गमना भोग नर्तना ॥ ८९ ॥ येकपाद तला क्रांत महिमेंल मध्यगा ॥ ब्रह्मा
 ऽश्वखरा क्रांत पाद गुच्छन खस्थिता ॥ ९० ॥ एकार्था हय धर्मार्थ वादि निर्णाय
 कारिणी ॥ विशिष्ट धर्म कर्म श्रीः कर्मबंध निश्चिन्ना ॥ ९१ ॥ ज्ञाना विज्ञा सिरूपा
 र्था परमार्था व बोधिनी ॥ चित्त संतोष रूप वाचि न विज्ञान संततिः ॥ ९२ ॥ अशेष भावा
 र्थ रतिः श्रृंग श्रृंग्या शया विता ॥ चित्तानलाग्र ज्वाला भीज्वाला ज्वाला मुखी ज्वरा

२३॥ तरुणीकरुणा क्रीता संक्रांतिः सूर्यविंवगा ॥ सूर्यको प्रतीकाशपरकुंड
 निनीकुंडः ॥ २४॥ भवरागाद्यतीता न भवत्रयसदागतिः ॥ शुभां शुधवलका
 राशरवंधां शुभप्रभा ॥ २५॥ वालाके मंडलस्था या वहि कोटि समानना ॥ वेद
 र्यमणि सुखा या महानीलकवच्छवि ॥ २६॥ इन्द्रनीलाय सुखायामहानीलके
 वच्छवि ॥ महामणिमयूरव श्रीरश्रीनारविशूखरां ॥ २७॥ लोकधातुशताकं पा
 रुढिः पदमहाकमा ॥ महासमिति महाधेया स्मार्त मार्गप्रवर्तनी ॥ २८॥ मुनिसं
 पूजिता मुद्रमुनी श्रवरप्रदा ॥ मारमोदमदा क्रीता मारसूर्यरघातिनी ॥ २९॥
 वतुस्मृतिसमाधिस्थाना नाकुसुमशोभिता ॥ वसंतकुसुम छाया ग्रीष्मातप
 विनीदनी ॥ ३०॥ वर्षा वर्षा य सी ज्येष्ठा कनिष्ठा शरदाश्रया ॥ हिमंत सीतलोहे

रामः
॥७॥

मज्योतिर्ज्योतिर्विहीश्वरी ॥ १॥ वेद्यविद्या ज्वलंती वरुदंती स्वमुखे वधि ॥ ओष
 धीशकिटिठा वदधी ववरदायिनी ॥ २॥ अरुंधत्यरुणा भासा वरुणेश्वर पूजिता ॥
 वायुसर्वायु रूपा वपे व भूते श्वरी श्रुतिः ॥ ३॥ पंचप्राणपंचहविः पंचवाराण्युधार
 विः ॥ अंकांगभागनयधीः पार्वती पार्वताश्रया ॥ ४॥ सर्वतत्वमहासंगानिः संग
 गगनोपमा ॥ सर्वतत्वमनोजाता सर्वतत्वमनोजवा ॥ ५॥ सर्वतत्वोद्दिष्टार्थज्ञास
 वतत्वमनोहरा ॥ पंचस्कंधार्थतत्वज्ञा पंचस्कंधविशुद्धधक ॥ ६॥ सर्वनिर्वाण
 कोटिस्था सर्वनिर्वाणकोविदा ॥ सर्वशास्त्रप्रतीतिस्था सर्वशोखाथजोपिता ॥ ७॥
 द्वादशैकादशी पूर्णानवमी नवयोनिजा ॥ अष्टशानावबोधाववतुः सत्यनयार्क
 तिः ॥ ८॥ अष्टमी पंचमी पाठावतु द्वादशमूर्तिधक ॥ द्वादशाकारसप्तार्थायोऽ

२०
 १५
 १०
 ५
 ०
 शकारतत्त्वधक ॥ ८ ॥ विंशत्याकारसंवेधिः समुद्रक्षोभकारिणी ॥ समुद्रतनया
 स्वागासमयाचारवध्वभा ॥ ९० ॥ नानातनयो यामजगदर्थविभाउका ॥ केशह
 शखगीर्धस्था शेषशायिसमुद्रता ॥ ९१ ॥ योगमायापरगति योगकोतारतिस्मृ
 ता ॥ सर्वतात्माश्विनी याम्याकृतिकोवरभूषणा ॥ ९२ ॥ रोहिणीवत्तवासावरोहि
 णीशकटोविता ॥ मृगमूर्धापंचमूर्धापूतारशवियोगिनी ॥ ९३ ॥ पुनर्वसुप्रसलो
 के पुष्यार्थविभवप्रदा ॥ पूर्वाफाल्गुनिकारूपा सोतराहस्तविस्तरा ॥ ९४ ॥ विशां
 वरधरा स्वाति विशा स्वाति प्रिया प्रसूः ॥ मैत्रदेवी मित्रं मैत्री ज्येष्ठा न्वयकृतस्थि
 तिः ॥ ९५ ॥ मूलो कुरा मूलमयी पूर्वो तरमतिः सती ॥ अविष्ठा बाभिजि ज्येष्ठा ध
 निष्ठा धनं दे ज्येष्ठा ॥ ९६ ॥ शतवाहुशताकार शतशीखी शताभिषक ॥ पूर्वो ॥ ९७ ॥

२०
 १५
 १०
 ५
 ०
 तारभाद्रपदरेवतीरमणिप्रिया ॥ ९८ ॥ अनंतवसति शृंगा आद्या वाकाशगोचरा ॥ आदित्यज
 ननी देवविधासिन्यादिदेवता ॥ ९९ ॥ इला ईश्वरवक्षस्थार्द्रा नीकमार्थदा ॥ उकी उमा ततोष्मा
 यशो यशो ह्यसुपोषणा ॥ १०० ॥ ऋग्वल्दीनपदसेव्या वीनकुलेश्वरी ॥ हरणां कविंवद
 नारैकाक्षरकीजिनी ॥ १०१ ॥ ओंकारवेदतत्वज्ञा ओषधीश्वरपूजिता ॥ अंवाभुंभनिभुंभ
 गेती अः कारवपुषीवधूः ॥ १०२ ॥ कामदेवकलाकांता कनकांगदमंडिता ॥ कुबुजिका काम
 लांगीवकोशदा कोपनाशिनी ॥ १०३ ॥ कुशेशयकराकारशृंगली कनकप्रभा ॥ खेवरी खड्गधा
 रा खेवजनाक्षी खलोतका ॥ १०४ ॥ खेटेश्वरी खेटकावरखड्गगुशलायुधा ॥ गजास्यजननी
 जोतिगंधर्वकुलनंदिनी ॥ १०५ ॥ गुर्जरी गारुडी विद्याजोडजागरुडप्रभूः ॥ धनवाहनपूज्या
 धनसारदिवासिनी ॥ १०६ ॥ धमेश्वरी धमण्याद्युधु रावभीषणा ॥ १०७ ॥

२०
 १५
 १०
 ०
 २६ यकोरनयना चार्च्यं वंदिका वामरीचिता ॥ छत्रशोभा छ
 २७ जगद्धात्री जगत्सिद्धि जागरूक समष्टविः ॥ जागृतिश्च
 २८ जगद्योनिर्जगद्विजयदायिनी ॥ २९ जंकरिणी कूर्करिणी अनुरूपपरां विका ॥ टंकाय
 ३० जंकाराष्टकुरेठजयोज्वला ॥ ३१ डिङ्खी उङ्खी ठुवरी शोणी मायावनयोनिता ॥ तापिताप
 ३२ जयहरतापिनी तप ॥ धुति ॥ ३३ जलायुधातमो हं त्रीतनीता मरसप्रभा ॥ स्थूला कतिस्थ
 ३४ लीधुली दक्षजा देवनाथकी ॥ ३५ देवेन्द्रतनया दक्षा दक्षयज्ञविनाशिनी ॥ धर्मदा
 ३६ धर्मजा धर्मा धर्मकर्मफलप्रदा ॥ ३७ धात्री धनेश्वरी धारा धर्मकर्मविवक्षणा ॥ न
 ३८ वपात्रधरनाम्ना नगजाननगवासिनी ॥ ३९ नागयज्ञोपवीता च नर्मदा त्रिनरेश्वरी
 ४० नंदजानंदिसेव्या च नारदार्धिसमावृता ॥ ४१ पामरेशी पीवरं सापिशलां गोपि

रामः
 २५

१५
 १०
 ०
 ४२ पद्मवद्वी च पादलीकुसुमप्रभा ॥ ४३ पद्मवरधरा पुराणा पूः पोर्वापर्यपूजि
 ४४ प्रदा फलहस्ता वलिहस्ता वलिप्रिया ॥ ४५ बालकेलिविंदो यी वलारातिवत्प्रदा ॥ भ
 ४६ नवपुष्पी भगवता सा भगालया ॥ ४७ भर्जप्रिया भाग्यदात्री भर्जविंदो निवासिनी ॥ भा
 ४८ यज्ञभा भावभगवता भगवर्चना ॥ ४९ माधवी मधुरा माया मानदा मधुनखना ॥ मर्त्य
 ५० मधुरेश्वरी मेध्या मधुमता मधुप्रिया ॥ ५१ मीमांसा मदनश्री दायशो दायक्षणी युतिः ॥ यक्षो
 ५२ यक्षधात्री यजुर्वेदार्थसूचिता ॥ ५३ याज्ञकी यज्ञमानश्री रत्नाकरसुता वरा ॥ रभोपमो हर
 ५४ योनिं चरति शिवक ॥ ५५ रुरुभैरवसेव्या चरति दारतितोयिता ॥ रितो भवारजोभूता रा
 ५६ जासी चरजस्वला ॥ ५७ लंदोदरी लता लूता लूता तंतुविता निता ॥ लंका चला लाल ले
 ५८ ना ललना बीजभूयिता ॥ ५९ वरासे हो वरधरा वीरेशा नी वरांकरा ॥ वस्तुप्रिया व

स. लुहिनावस्त्रालंकारभूषणा ॥ ४४ ॥ वाणीवीजमयीविद्याशंकरिशिवलोचना ॥ शरश्वन्द
 कलोत्तंसाशरश्चंद्रसमानना ॥ ४५ ॥ शतलोमाशमीशाखावेदशाखाशवीभुजा ॥ बटुक
 जसज्जाल्यर्णवदभुजाघोडशाक्षरी ॥ ४६ ॥ सत्पासप्रियासीतासात्विकीभाववर्जिता ॥
 सतीसरसावसासीसुरपूजिता ॥ ४७ ॥ समस्तभुवनिर्त्यसमस्तोरगपूजिता ॥ समस्त
 निलयाहरीशानीहराविता ॥ ४८ ॥ हाटकेश्वरसंसेव्याहालाघूर्णितलोचना ॥ हिला
 वविहीनोहविभुग्वद्येभाहरीन ॥ ४९ ॥ हरिरश्मिमयूरवश्रीहकाराक्षरमातृका ॥
 शक्षरादेशस्थाक्षराक्षरातोषिता ॥ ५० ॥ लक्षस्वरूपिणीदेवीहसशक्तिस्वरू
 अनक्षरमंत्रमयीमंत्रयोनिरयोनिजा ॥ ५१ ॥ मंत्रभाशाज्ञानमयीज्ञानेश्वरी
 कुलमंत्रेश्वरीकुलामहामंत्रकुलत्रयी ॥ ५२ ॥ सर्वमंत्रार्थजननीमहाव

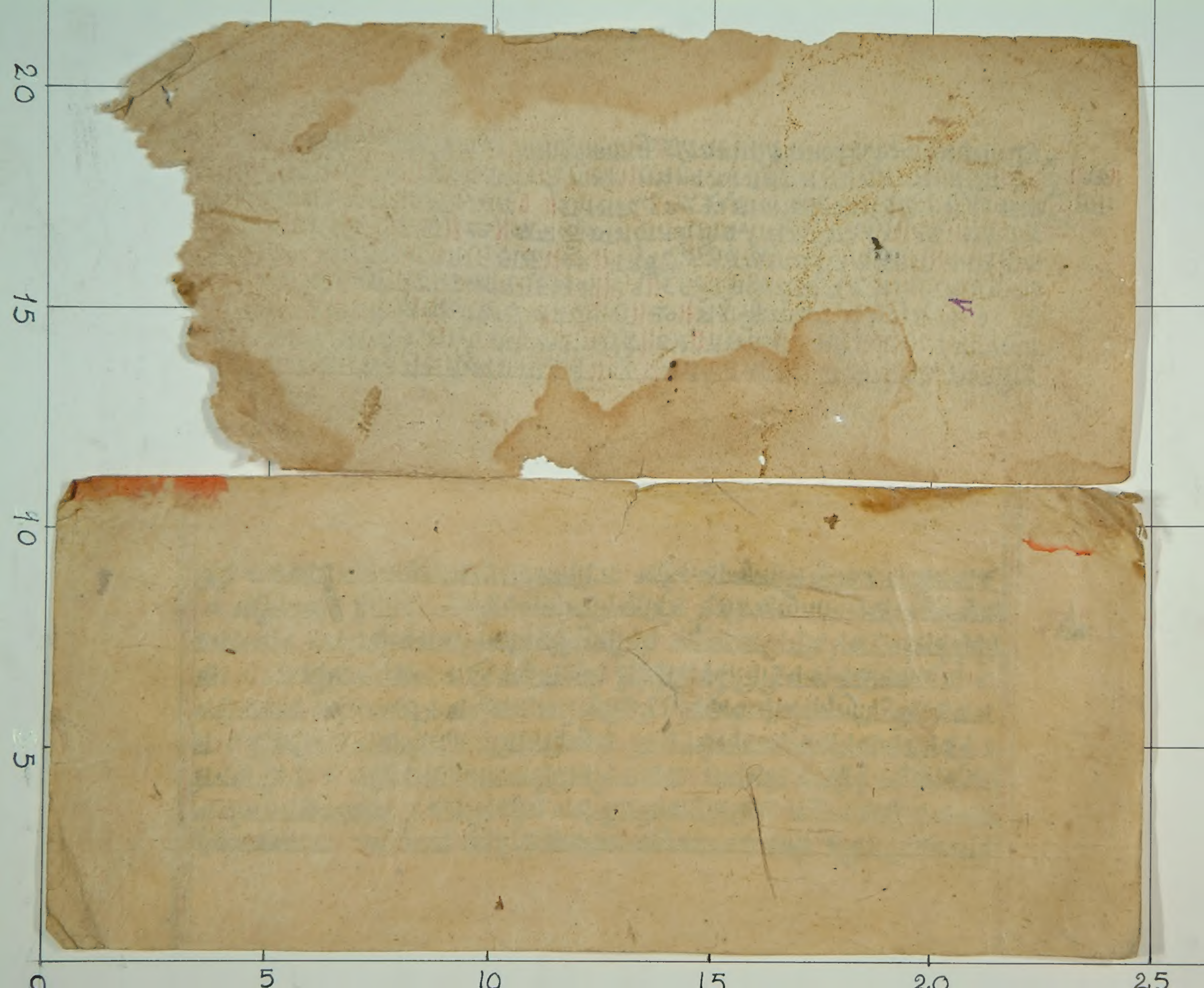
रामः
 ॥१०॥

श्वरीधुतिः ॥ पंचक्षरीमहाशून्याविंदुशून्याष्टाक्षरी ॥ ५३ ॥ द्वाविंशत्यक्षरीविद्याश्री
 विद्याचतुरक्षरा ॥ सर्वाक्षरानिराकारघोडशाघोर्ध्वबाहुधक ॥ ५४ ॥ अकलाकलनातीता
 सर्वोक्षरपरप्रसूः ॥ सर्वज्ञानकलाभिजासमाधिकुलनायकी ॥ ५५ ॥ समाधिकार्यकाया
 स्यासर्वसंभोगकार्यधक ॥ निर्वाणकार्यकाग्न्यायनित्यक्लिन्नाश्रमेश्वरी ॥ ५६ ॥ दिशदि
 श्वेश्वनिर्माणजगजन्मक्षयंकरि ॥ देवाधिदेवदेवेशीदानवेन्द्रसमर्चिता ॥ ५७ ॥ महिषा
 सुरदपेक्षीरक्तवीजप्रमदनी ॥ अशरीराततलनूस्त्रयीतनुसमानना ॥ ५८ ॥ उभीरीभव
 काताराकातारनिलयाक्षरा ॥ प्रख्यातदशादिग्वर्णजर्णशीवरवरणीजा ॥ ५९ ॥ श्रीचन
 दिनीवेद्यामंत्रपूजाफलप्रदा ॥ रजकीराजपतीवन्तापिनीनापितांगना ॥ ६० ॥ धर्मि
 शीधर्मसीभावानिर्लिशोऽपलमस्तका ॥ सदानंदमयीमूर्तिस्वयंभूकुसुमार्विता ॥ ६१ ॥

अकारिंतालिङ्गमूर्तिभगमूर्तिनिरुक्तिः ॥ भगलिङ्गमृतमयीमूलविद्यावतन्मयी ॥ ६२ ॥
 सावित्रीचदरणाचदेवीभर्जोमयीभगाम् ॥ देवस्यवद्वैभावावधीमहीक्षीमहाप्रिया ॥ ६३ ॥ धि
 ओयोनिरक्षतेनाशवद्विद्याप्रबोदिनी ॥ श्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं प्रीं परमार्थाधिदेवता ॥ ६४ ॥ ॐ
 सोः श्रीः सोः श्रीं ह्रीं स्वाहा गायत्री सोः सदायिनी ॥ इति हं देवि गायत्र्यामंत्रनामसहस्रकं ॥ ६५ ॥
 चतुर्वेदागमोद्भूतं सर्वतंत्रेषु गोपितं ॥ सारं सर्वस्वभूते मे रहस्यं त्रिदिव्यकसां ॥ ६६ ॥ पु
 ण्यं यशस्करं दिव्यं सर्वसारस्वतप्रदं ॥ ब्रह्मोत्तरकरं ब्रह्मसाधने करसायनं ॥ ६७ ॥ करसां स
 रसि ह्रीं नां त्रिपदीतत्तमुत्तमं ॥ सर्वपापप्रशमनं महापातकनाशनं ॥ ६८ ॥ यः पठे पाठयेद्वा
 पेश्च रोगिते श्रावयेदपि ॥ स गायत्र्याः परः पुत्री लक्ष्मी वानभिजायते ॥ ६९ ॥ यः पठे स तं रा
 मो अविवासमनोमयं ॥ अद्भुता अद्भुता वापि स भवे मे रवोपमः ॥ ७० ॥ योर्थकामी पठे

रामः
 ॥ ११ ॥

वास्मशाने वादिताग्रतः ॥ तस्य गेहे निधानानि भविष्यन्ति पदे पदे ॥ ७१ ॥ यः पठे हृदय
 ले तु दग्धावतं स हे श्वरी ॥ विधिरौ वाथ प्रंगुर्वीकारो वा प्राप्स्ये ववा ॥ ७२ ॥ कुष्ठी वा श्वित्र
 ना देवी सरे गान् नुच्यते क्षणात् ॥ यः पठे देवि स साहमेकभक्तो जितेन्द्रियः ॥ ७३ ॥ कुशा
 तरसां संविष्टः शोचाचारपरो निशि ॥ प्रत्यक्षं तस्य गायत्री वरदा दर्शनप्रदा ॥ ७४ ॥ रवो अ
 भर्क्षसंयुक्तं लिखेद्भूर्जे महेश्वरी ॥ अष्टगंधेन स घंत्रं मूलविद्यां लिखेत्ततः ॥ ७५ ॥ ततो
 देव्याश्च गायत्र्यामंत्रनामसहस्रकं ॥ विलिख्य विधिवद्भक्त्या श्वेतसूत्रेण वेष्टयेत् ॥ ७६ ॥
 रक्षं मूलमयी देवी पूजयेद्यंत्रराजवत् ॥ धारयेदक्षिणे वा होयो विद्यां मकरतथा ॥ ७७ ॥
 किं कीनलभते कामं यद्यन्मनसि वर्तते ॥ बंध्यापिलभते पुत्रान् साक्षाद्देववरोपमान् ॥ ७८ ॥
 मार्कंडेया युयुः पुत्रान्भूतवत्साविराष्टिके ॥ काकबंध्या लभेत्पुत्रं कामदेवोपमं श्री



श्रीगणेशायनमः॥ **उत्तरउवाच॥** सुवर्णविकृतानामान्यायुधानिमहात्मनां॥ रुचिराणि प्रकाशंते
 पार्थानामाशुकारिणां॥ **१॥** कजस्त्रिदशैः पार्थः कौरव्यो वायुधिष्ठिरः॥ नकुलः सहदेवश्च भीम
 सेनश्च पांडवः॥ **२॥** सर्व एव महात्मानः सर्वमित्रविनाशनाः॥ राज्यमक्षैः पराकीर्य न श्रूयंते कथंच
 न॥ **३॥** द्रौपदी कच पांचाली स्त्रीरत्नमिति विश्रुता॥ नितानक्षैस्तदा कृत्वा तानेवान्तगमदयं॥ **४॥**
भर्जुनउवाच॥ भद्रमस्मर्त्तुं नः पार्थः सभास्तारो युधिष्ठिरः॥ वल्लवो भीमसेनस्तु पितृलेख स पाच
 कः॥ **५॥** अभवंधोधनकुलः सहदेवस्तु गोकुले॥ सैरंधी द्रौपदी विद्विद्यत्कृते कीचकाहताः॥ **६॥**
उत्तरउवाच॥ दशपार्थस्य नामानि यानि पूर्वश्रुतानि मे॥ प्रवृत्त्यास्तानि यदि मे श्रद्धया सर्वमेव ते
॥७॥ भर्जुनउवाच॥ हंत ते हं समाचक्षे दशनामानि यानि मे॥ वेराटे भृगुतानि त्वं यानि पूर्वश्रुता
 निते॥ **८॥** एकाग्रमानसो भूत्वा भृगु सर्वं समाहितः॥ भर्जुनः फाल्गुनो जिह्मः किरीटी श्वेतवाह

रामः॥
 ११

नः॥ **९॥** वीभत्सुर्विजयः कृत्स्नः सव्यसाची धनंजयः॥ **उत्तरउवाच॥** केनासि विजयो नाम केनासि श्वेत
 वाहनः॥ किरीटी नाम केनासि सव्यसाची कथं भवान्॥ **१०॥** भर्जुनः फाल्गुनो जिह्मः कृत्स्नो वीभत्सुरे
 व च॥ धनंजयश्च केनासि ब्रह्मन्मत्ततः॥ **११॥** श्रुता मि तस्य वीरस्य केवलं नाम हेतवः॥ तत्स
 र्वं यदि मे ब्रूयाः श्रद्धया सर्वमेव ते॥ **१२॥** भर्जुनउवाच॥ सर्वान्नतपदान्जित्वा विजमादाय केवलं॥ म
 ध्ये धनस्य तिष्ठामितेनाहुर्मधनंजयं॥ **१३॥** अभिप्रयामि संग्रामे यदहं युद्धं दर्शयस्व॥ नानित्वा विनि
 वर्त्तमि तेन मां विजयं विदुः॥ **१४॥** श्वेताः कांचनसन्नासराथे युज्यंति मे हवा॥ संग्रामे युद्धमानस्य
 तेनाहं श्वेतवाहनः॥ **१५॥** उत्तराभ्यां फाल्गुनीभ्यां नक्षत्राभ्यामहं दिवा॥ जातो हि मवतः पृथ्वेतेन
 मां फाल्गुनं विदुः॥ **१६॥** पुरा शक्रेण मे दत्तं युध्यतो दानववर्षभैः॥ किरीटं मूर्ध्नि सूर्याभं तेनाहुर्मा
 किरीटिनं॥ **१७॥** न कुर्यां कर्म वीभत्सं युध्यमानः कथंचन॥ तेन देवमनुष्येषु वीभत्सुरिति विश्रुतः

॥ १८ ॥ उभौ मे दक्षिणोपाणी गंडावस्पविकर्षणे ॥ तेन देवमनुष्येषु सव्यमाचीति मां विदुः ॥ १९ ॥
 पृथिव्यां चतुरंतायां वर्णो मे दुर्लभः समः ॥ करोमि कर्मभुङ्क्षं च तस्मान्मां मर्जनें विदुः ॥ २० ॥ भहं उ
 रापो दुर्धर्षा दमनः पाकशासनिः ॥ तेन देवमनुष्येषु जिह्नुर्नामास्मि विश्रुतः ॥ २१ ॥ कृष्ण इत्येव
 दशमेनामचक्रे पितामह ॥ कृष्णावदानस्य मतः प्रियत्वाद्दालकस्य वै ॥ २२ ॥ वैशंपायन उवा
 च ॥ ततः स पार्थ वैराटि रभ्यवा दयदंतिकात् ॥ भहं भूमिं जयोनामनाम्नाहमपि चोत्तरः ॥ २३ ॥
 दिक्ष्वात्वा पार्थ पश्यामि स्वागतं ते धनं जय ॥ लाहिताक्ष महाबाहो नागराज करोपम ॥ २४ ॥
 यदजानादवोचंत्वां क्षंतुमर्हसि तन्मम ॥ यतस्त्वया कृतं पूर्वं चित्रं कर्म सुदुष्करं ॥ भनो भयं
 व्यतीतं मे प्रीतिश्च परमात्वरिय ॥ २५ ॥ ॥ इति

॥ अमः ॥
 ॥ २ ॥